प्रेमचंदोत्तर कथा – साहित्य में पारिवारिक तनाव

Smitha Chako*

Vanalinna Kaart, Elakolloor-PO, Konni, Pathanamthitta

सार – *यशपाल, अमृतराय, रांगेय राघव आदि कहानीकार मार्क्सवाद से प्रभावित थे। यशपाल ने प्राचीन रूढ़ियों का खंडन करके सामाजिक जीवन के यथार्थ की कहानियाँ लिखी, उपेंद्रनाथ अश्क ने समाज में व्याप्त नग्न सत्यों का यथार्थ चित्रण किया। मनोविश्लेषणात्मक कहानीकारों में जैनेंद्र,इलाचंद्र जोशी और अज्ञेय प्रमुख थे। महिला कहानीकारों में प्रमुख हैं - सुभद्राकुमारी चौहान, कमलादेवी, उषा मित्र, चंद्रकिरण सोनरिक्सा, मन्नू भंडारी, शिवानी आदि। सन 1940 के आस-पास उपन्यास साहित्या में जिन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं, उनमें हैं -भगवतीचरण वर्मा – 'टेढ़े -मेढ़े रास्ते', 'तीन वर्ष।' सियारामशरण गुप्त- 'नारी' और 'गोद।' जैनेंद्रकुमार – 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र।' हज़ारीप्रसाद द्विवेदी – 'बाणभट्ट की आत्मकथा।' यशपाल – 'दिव्या', 'दादा कामरेड', 'मनुष्य के रूप।' अज्ञेय – 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' आदि। स्पष्ट रूप से उपन्यास लेखन में नज़र आती हैं। पहली धारा में प्रेमचंद की यथार्थवादी साहित्य-लेखन की प्रवृत्ति और दूसरी धारा प्रसाद की भाववादी परंपरा को आगे लेकर चली।दूसरी धारा में प्रगतिवादी और मनोवैज्ञानिक यत्न उपन्यासों का विकास हुआ।अतः यहाँ कुछ कथा -साहित्य में पारिवारिक तनाव को देखने का किया जाएगा ।*

---------------------------------x---------------------------------

प्रेमचंदोत्तर युग की कहानी दो धाराओं में प्रवाहित हुई -

1. प्रेमचंद परंपरा की धारा ।

2. मनोविश्लेषणात्मक परंपरा।

प्रेमचंद परंपरा को आगे बढ़ाने वाले विश्वंभरनाथ शर्मा और सुदर्शन उल्लेखनीय हैं।

कहानी विधा

'मेरी जीत:' यशपाल-श्री यशपाल यथार्थवादी परंपरा के प्रमुख लेखक हैं ।इन्होंने सामाजिक रूढ़ियों पर साहित्य के माध्यम से सतत प्रहार किया हैं ।जीवन के महत्वपूर्ण अंग -आर्थिक प्रश्नों को अपनी रचनाओं में सुलझानें का प्रयत्न किया हैं । जीवन के महत्वपूर्ण अंग -आर्थिक प्रश्नों को अपनी रचनाओं में सुलझाने का प्रयत्न किया है। ऐसी ही इनकी कहानी 'मेरी जीत' हैं। जिसमें पति -पत्नी के संबंधों में केवल हार को ही पत्नी की जीत का कारणभाव दर्शाया हैं। कुत्ते के कारण दोनों में आए तनाव को दर्शाकर अंत में पत्नी के प्रेमरूप की जीत दर्शायी है। ऑफिस से आए उनका गुस्सा कुत्ते को देख त्योंरियाँ चढ़ा रहा तो सुबह होने के बाद भी उनका गुस्सा कुत्ते उतरने के बजाय बढ़ गया और उन्होंने कहा – "फ्रौक इस गंन्दे को ! मर जायगा तो क्या करे ? इसमें पूछकर लिए था ?यह पिल्ला इस घर में रहेगा तो हम नहीं रहेंगे" [1]। प्रयुक्त वचन साफ तौर पर पारिवारिक संबंधों के पति और पत्नी के बीच तनाव को दर्शा रहे हैं।

'समर्पण': भगवतीप्रसाद वाजपेयी -श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी ने मध्यभवर्गीय समाज का चित्रण सफलतापूर्वक किया हैं। इनकी कहानियों में आज की समस्या को चित्रण किया गया हैं। 'समर्पण' आपकी मनोवैजानिक कहानी हैं जिसमें आपने गज्जू और सेठजी के पत्रों द्वारा विचारों के दुन्दु से हृदय के 'सत्य' को प्रकट करने का सफल प्रयास किया हैं। जो चोर को भी 'समर्पण' करवा देता है। इस कहानी में गज्जू के मानसिक तनाव को दर्शाया गया है जब उसे पता लगता है की हीरा बिक चूका है और सेठजी 15 हज़ार रुपये बैंक में डाल आए तो वह सिसकियाँ लेता बोला – 'हाय मैं तो मिट गया। मेरा तो सर्वस्व चला गया।' ये वचन स्पष्ट रूप से गज्जू के तनाव को दर्शाते हैं।

'सयानी बुआ ':मन्नू भंडारी -' सयानी बुआ 'व्यावहारिक जीवन की कहानी है। जिसमें दाम्पत्य और गृहस्थ जीवन की भी झलक है। बुआजी ,भाई साहब ,उनकी पुत्री अन्नू और मैं रुपी पात्र। मैं सभी पत्रों पर बुआजी का शासन इस प्रकार होता है की सभी उनसे भयभीत रहते हैं और जिसकारण अन्नू (5 वर्ष की बालिका) बीमार हो जाती है। पहाड़ पर केवल वह उसके पिता आवर नौकर को जाने की आज्ञा होती है, उन्हें

www.ignited.in

नहीं। तब बुआजी जो हिदायतें देती है –"देखो, यह फ्रँक मत खो देना, यह व्याले मत तोड़ देना, वरना पचास रुपये का सैट बिगड़ जाएगा।"[2] आदि -आदि जिनके कारण अन्नू के बाल- मन पर एक प्रकार का तनाव आ जाता है।

उपन्यास विधा

'शेखर एक जीवनी': अज्ञेय - अज्ञेय का पहला उपन्यास 'शेखर एक जीवनी एक क्रांतिकारी की कथा को लेकर चलनेवाला उपन्यास है। 1941 में प्रथम व 1944 में द्वितीय भाग प्रकाशित हुआ। 'शेखर एक जीवनी' का प्रथम भाग शेखर के व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि है। उनका जन्म किन परिस्थितियों में, किस परिवार में हुआ ? किस, प्रकार उसे जंजीरों में जकड़ लिया गया ?' वह ' क्या था जो शारदा का तन कॉप रहा था ? आदि जीवन की अनबुझे पहेलियों का उत्तर शेखर ने इस समज से माँग ,पर उसे हमेशा एक ही उत्तर मिला -"तुम बच्चे हो, जाओ खोलो, जाओ पढ़ो, जाओ काम करो"।

दूसरे भाग में शेखर के संघर्ष का विश्लेषण हैं। स्वयं सेवक के कैंप में उसे जेल जाना पड़ता हैं। इस खण्ड की सबसे बड़ी विशेषता यह हैं की इसमें वैचारिक, राजनैतिक और नैतिक समस्याओं को मनोविज्ञान के परिपारर्व में देखा गया है। इसका प्रत्येक पात्र संघर्षरत है। दोनों खण्डों की कथा को एक - दूसरे इस प्रकार जोड़ा गया है कि दोनों एक -दूसरे से मिलते हुए भी प्रथक अस्तित्व रखते हैं।

एक प्रसंग में जब मंदिर जाने को था तभी के साथ होने को कहने पर भी वह पिता की बात नहीं मानता। पूछने पर कहता है – "मैं प्रार्थना नहीं मानता ! भवानी झूठी है। ईस्वर झूठा है। इस्वर नहीं है।"[3] तभी उसकी खूब पिटायी होती है। लेकिन इस बात से उसे थोड़ा भी दु:ख नहीं होता। उलटे वह बेंत का मार खाकर पीटने का आनंद प्राप्त करता हैं। इसप्रकार शेखर के मानसिक एवं पारिवारिक तनाव को इस उपन्यास के अंतर्गत पाया गया हैं।

'चित्रलेख': भगवतीचरण वर्मा – कामनाओं की पूर्ति से संबंधित पाप -पुण्य विषयक समस्या को 'चित्रलेखा' में स्पष्ट करने का प्रयत्न श्री भगवतीचरण वर्मा ने किया है। विवाह और प्रेम के गहरे संबंध की दृष्टि रखनेवाला कुमारगिरी और बीनगुप्त, कुमारगिरी खेतांक तथा विशालदेव की आकृष्टिक दृष्टि वाली 'चित्रलेखा' इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है, तब तनावपूर्ण वाक्य उससे कहती है – (नीच और झूठे पशु!.... वासना के कीड़े ! तुम प्रेम क्या जाने? तुम आपने लिए जीवित हो - ममत्व ही तुम्हारा केंद्र है। [5]"इन वचनों द्वारा कुमारगिरि के रूप को जान चित्रलेख के तनाव को स्पष्ट देखा जा सकता है।

'दिव्या' यशपाल -बौद्धकलिन उपन्यास 'दिव्या' ऐतिहासिक कल्पना मात्र है। इसमें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर व्यक्ति और समाज की प्रवृत्ति और गति का चित्र है।जिसे 13 भेदों में विभक्त किया गया है। दिव्या एक समय नृत्य हेतु आर्य विनय के कक्ष में ही थी। उन्होंने कादम्बिनी का पात्र उपस्थित करने की आज्ञा दी। प्राप्त प्रस्तुत करने पर आर्य ने कौतुक से हाथ मेरे अंग पर दबा दिया। मेरे लजाकर सकुचाने से आर्या कुपित हो गई और बोली, "तू छली और कुलटा है। दासी होकर कुल ललनाऔ की भांति लाज का नाट्य करती हैं। तू आर्य को मोहित करना चाहती है। उक्त वचन दिव्या के मन पर चोट करते है तथा मानसिक तनाव निर्मिति में महत्वपूर्ण स्थान रखने है। अतः यहाँ भी तनाव को स्पष्ट रूप से देखा जाता है।"

संदर्भ सूची

कहानी कौमुदी, डॉ। हिरण्मय, पृ. 31

हिंदी कहानियाँ, डॉ। कृष्णलाल, पृ.74

शेखर एक जीवनी (भाग - 1) अज्ञेय, पृ. 91

चित्रलेखा, भगवतीचरण वर्मा, पृ. 176

दिव्या, यशपाल, पृ.35

Corresponding Author

Smitha Chako*

Vanalinna Kaart, Elakolloor-PO, Konni, Pathanamthitta

www.ignited.in